International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

स्त्री शिक्षा

शोध निर्देशक,डॉ रिशिकेश यादव

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

शोधार्थी,विमला राय

श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

स्त्री शिक्षा अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की तरह शामिल करने से संबंधित हैं दूसरे रूप में यात्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी।

वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिए जितना कि पुरुष को यह सिर्फ सत्य हैं कि यदि माता शिक्षित ना होगी तो देश की संतानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता है।

भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार या मुगल काल में भी अनेक महिला विधियों का उल्लेख मिलता है पुनर्जागरण के दौरान में भारत में स्त्री शिक्षा को नए सिरे से महत्व मिलने लगा ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा सन् 1954 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर 0.2þ से बढ़कर 100þ तक पहुंच गया था कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था।

1986 में शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया था स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सन 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिए अधिक लड़कियों को पाठशाला में दाखिला करने के लिए

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

और उनकी स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजनाएं बनाए हैं जैसे की निशुल्क पुस्तकें दोपहर की भोजन आदि।

सन 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पुनर्गठन देने को सरकार ने फैसला किया सरकार ने राज्य की उन्नति के लिए लोकतंत्र के लिए और महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए महिलाओं को शिक्षा देना जरूरी समझा था।

लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा गरीबी पर काबू पाने में एक महत्वपूर्ण कदम है कुछ परिवारों का काम कर रहे पुरुष दुर्भाग्यवश दुर्घटनाओं में विकलांग हो जाते हैं उस स्थिति में परिवार का पूरा वह महिलाओं पर टिका रहता है महिलाओं की ऐसी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए वह विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर सकती हैं आज महिलाएं शिक्षक डॉ वकील और प्रशासक के रूप में काम कर रही हैं महिलाओं की शिक्षा से दहेज समस्या बेरोजगारी की समस्या सामाजिक शांति से जुड़े मामलों को आसानी से हल किया जा सकते हैं।

बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती हैं बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमीर लकीर के सामान्य जीवन का स्थाई आधार बन जाता है लेकिन आज पूरे भारतवर्ष में इतने असामाजिक तत्व उभर आए हैं जिन्होंने मां बहनों का रिश्ता खत्म कर दिया हैं और जो भोग विलास की जिंदगी जीना अधिक उपयोगी समझने लगे हैं यही कारण है कि कस्बों में लेकर शहरों की मां बहने असुरक्षित हैं।

असुरक्षा के कारण ही बलात्कार और सामूहिक बलात्कार जैसी अनेक घटनाओं के जल जाल में फंस कर महिलाओं का जीवन नर्क बन चुका है वास्तव में कहा जाता है कि महिलाओं की शिक्षा किसी पुरुष की शिक्षा से कम महत्वपूर्ण नहीं है समाज की नई रूपरेखा तैयार करने में महिलाओं की शिक्षा पुरुषों से 100 गुना अधिक उपयोगी हैं इसीलिए स्त्री शिक्षा के लिए सरकार को प्रयासरत होना चाहिए।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

स्त्री और मुक्ति आज भी नदी के दो किनारे की तरह हैं जो कभी मिल नहीं पाती सत्ता हो तौर पर देखा जाए तो लगता है कि भारत ही नहीं विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाती हुई स्त्रियों ने अपनी पुरानी मान्यताएं बदली हैं आज की स्त्री की अस्मिता का प्रश्न मुखर होता जा रहा है अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष करती हुई स्त्रियों ने लंबा रास्ता तय कर लिया है परंतु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय के शिकार हैं जब–जब स्त्री अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती हैं तब तक जाने कितने रीति–रिवाजों परंपराओं की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है।

वस्तुतः 21वी सदी है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया जाता है। इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा समग्र समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किए गए।

आज देखने में आया है कि महिलाओं ने स्वयं के अनुभव के आधार पर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधार पर अपने लिए नहीं मंजिलें और नए रास्ते का निर्माण किया है क्या मात्र किस आधार पर उस सफलता के पीछे किसी पुरुष के हाथ होने की संभावना को नकार दिया जाएगा यदि नहीं तो फिर समस्या कहां है मैं कौन हूं का प्रश्न अभी भी उत्तर की आस में क्यों खड़ा है।

जवाब हमारे सभी के अंदर ही हैं पर उसको सामने लाने में हम घबराते हैं स्त्री को एक देश से अलग स्त्री रूप में देखने कीआदत डालनी होगी स्त्री के कपड़ों के भीतर नग्नता को खींचकर बाहर लाने की परंपराएं से निजात पानी होगी किसी की मजबूरी किसी के लिए व्यवसाय न बने यह समाज यह भी समाज को ध्यान देना होगा।

नग्नता और शालीनता के मध्य की बारीक रेखा समाज स्वयं बनाता है और स्वयं बिगड़ता हैं समाज में सरोकारों का रहना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि किसी भी स्त्री–पुरुष का सामाजिकता अकेली निर्वहन में स्त्री पुरुष

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

को समान रूप से सहभागी बनाना होगा और इसके लिए स्त्री पुरुष को अपना प्रतिद्वंदी नहीं समझे और पुरुष भी स्त्री को एक शरीर नहीं स्त्री रूप में एक इंसान स्वीकार करें स्त्री की आजादी और खुले आकाश में उड़ान की शर्त उत्पादन में उसकी भूमिका हो स्त्री की असली आजादी तभी होगी जब उसके दिमाग की स्वीकार्यता को न केवल उसकी देह की।

अंततः कहीं ऐसा ना हो कि स्त्री स्वतंत्रता पर सशक्तिकरण की अवधारणा पर खड़ा होने के पूर्व ही व्यस्त होने लगे और आने वाली पीढ़ी फिर वही सदियों पुराना प्रश्न दोहरा दे।

यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आए हैं लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुलिस प्रधान मानसिकता से पीड़ित है इस संदर्भ में युग नायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद का यह कथन उल्लेखनीय हैः—

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर हैं वहां की महिलाओं की स्थिति हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुंचा देना चाहिए जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सके हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं वरन उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए।

भारतीय नारियों संसार की अन्य किसी भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाएं सन्निहित है।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023